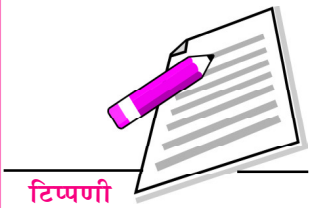

12

विश्वयुद्ध (प्रथम व द्वितीय) में भारतीय सैनिकों की भूमिका

ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन होने के कारण भारत ने दोनों विश्व युद्धों में भाग लिया। जैसा कि आप जानते हैं कि 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् भारतीय सिपाहियों को 'नियमित सेना' के रूप में संगठित किया गया और उन्होंने ब्रिटिश सैनिकों और अफसरों के अधीन लड़ने की कला का प्रशिक्षण लिया तथा अभ्यास किया था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सैनिकों को युद्ध का वास्तविक अनुभव हुआ तथा युद्ध की कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। बाद में वे अफगानिस्तान, अफ्रीका और बर्मा में कठिन परिस्थितियों तथा ठंड के मौसम में अपने घरों से दूर विदेशी भूमि पर थे। भारतीय सैनिकों ने कई वीरता पुरस्कार प्राप्त किए। उनके अनुशासन ने उनको सब देशों में प्रिय बना दिया जहां पर भी उन्हें जाना पड़ा। इसलिए हमें हमारे वीर सैनिकों के बलिदान के बारे में पता होना चाहिए जिन्होंने युद्ध में अपनी मित्र सेना का साथ दिया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप:-

- प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों को स्पष्ट कर पाएंगे;
- प्रथम विश्व युद्ध में भारत के योगदान को स्पष्ट कर पाएंगे;
- प्रथम विश्व युद्ध के प्रमुख युद्धों की सूची बना सकेंगे;
- द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीय सेना की भूमिका का आकलन कर सकेंगे;

12.1 प्रथम विश्व युद्ध

विश्व इतिहास में पहली बार अनेक देशों ने चार वर्ष तक चले युद्ध में भाग लिया था। यह युद्ध 28 जुलाई 1914 से प्रारंभ होकर 11 नवम्बर 1918 तक चला और इस युद्ध से बहुत से देश प्रभावित हुए। इसलिए इसे महायुद्ध अथवा प्रथम विश्व युद्ध कहते हैं। इस युद्ध में जिन देशों ने भाग लिया, उनमें जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, बुलगारिया तथा ऑटोमन साम्राज्य (जिन्हें धुरी के देश भी कहा जाता है) ने ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, इटली, रोमानिया, जापान तथा अमेरिका (जिन्हें

मित्र देश कहा जाता है) के विरुद्ध भाग लिया। यह युद्ध बड़े स्तर पर लड़ा गया।

काफी सैनिक युद्ध में मारे गए व जान-माल की हानि हुई। ब्रिटिश उपनिवेश होने के कारण भारत ने भी इस युद्ध में भाग लिया। आइए इस युद्ध के कारण तथा भारतीय सेना के योगदान का अध्ययन करें।

12.1.1 युद्ध के कारण

इस युद्ध के अनेक कारण थे। इनमें सबसे मुख्य कारण आस्ट्रिया के उत्तराधिकारी राजकुमार आर्किड्यूक फ्रांज फर्डीनैंड की 28 जून, 1914 में बोस्निया के साराजीवो में की गई हत्या को माना जाता है। ब्रिटिश और जर्मन के बीच यूरोपीय व्यापार को लेकर तथा जर्मनी द्वारा यूरोप में प्रमुख शक्ति बनने को लेकर झगड़ा चल रहा था। इसलिए यूरोप के दो शक्ति केन्द्र बन गए थे प्रथम तीन देशों- जर्मनी, आस्ट्रिया और हंगरी का गुट और अन्य तीन- एंटेंट इंग्लैंड, फ्रांस और रूस थे। (एंटेंट से तात्पर्य ऐसे देशों से था जिनके बीच मैत्री और समझ होती है।) शायद ही किसी ने सोचा होगा कि साराजीवो में चली एक गोली चार वर्ष तक चले युद्ध को जन्म दे सकती है और पूरे विश्व को उलझा सकती है। इन देशों में राष्ट्रवादिता भरी हुई थी और आर्थिक नीतियों के कारण आपस में तनाव था। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति बनाने हेतु कोई प्रभावशाली संगठन नहीं था।

अन्य कारण यह था कि कुछ देश आपस में गुप्त गठबंधन बना रहे हो। जिसका आधार राजनीतिक नेताओं की महत्वकांक्षाएं थी। इसलिए देशों के बीच सन्देह पनपने लगे। इन सब कारणों में मध्य आर्कड्यूक फ्रांज फर्डीनैंड की उनकी पत्नी के साथ 28 जून 1914 को हत्या की गयी जिसने चिंगारी का कार्य किया। यह युद्ध कहाँ हुआ? किन देशों ने भागीदारी की? यह जानने के लिए निम्न (12.1) मानचित्र देखिए।

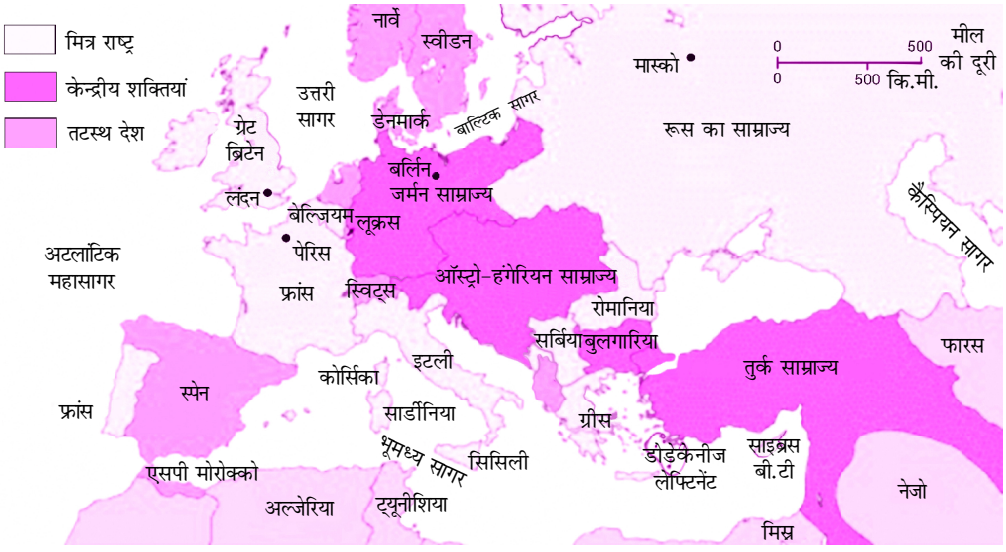

मानचित्र 12.1

चित्र 12.1 में आप प्रथम विश्व युद्ध के विस्तार को देख सकते हैं।

12.1.2 प्रथम विश्व युद्ध में भारत की भूमिका

आइए अब हम प्रथम विश्व युद्ध में भारत की भूमिका के बारे में जानते हैं। उस समय भारतीय सेना को ब्रिटिश भारतीय सेना कहा जाता था। भारतीय सेना को बिना तैयारी तथा बिना उचित कपड़ों के विदेशी धरती पर सर्दी के मौसम में तैनात किया गया था। इसके बावजूद भारतीय सैनिकों ने मित्र देशों का हिस्सा होने के नाते विशेष योगदान दिया जिसे विश्व में सराहा गया। भारत के पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा तमिलनाडु के लगभग 1.5 मिलियन सैनिकों ने ब्रिटिश का युद्ध में साथ देने के लिए स्वेच्छा से भाग लिया। भारतीय सेना ने पश्चिमी तथा पूर्वी मोर्चों पर युद्ध में भाग लिया और 1918 के बाद भी अफगानिस्तान तथा फारस में 1920 तक लड़ते रहे। उन्हें अनेक मेडल भी प्राप्त हुए। जिनमें 11 विक्टोरिया क्रास, 5 मिलिट्री क्रॉस, 973 इंडियन आर्डर ऑफ मेरिट और 3130 भारतीय विशेष सेवा मेडल शामिल थे। जहां तक रेजिमेंटों के भाग लेने का प्रश्न है- तो 12 हाथी घुड़सवार रेजिमेंट, 13 पैदल सेना रजिमेंट और अनेक अन्य सेना यूनिट ने ब्रिटिश सरकार के 13 सैन्य अभियानों में हिस्सा लिया। भारतीयों के लिए संतोष का विषय यह था कि उन्हें आधुनिक युद्धों में लड़ने का प्रशिक्षण मिल रहा था। 1914 में युद्ध प्रारंभ होने के समय ब्रिटिश भारतीय सेना में 23,000 ब्रिटिश और 78,000 भारतीय सैनिक थे। भारत की सेना निम्न स्थानों पर युद्ध के लिए गयी थी-

फ्रांस	-	2 × डिवीजन पैदल सेना
	-	2 × डिवीजन घुड़सवार
	-	4 × तोप ब्रिगेड
फारस की खाड़ी	-	1 × डिवीजन पैदल सेना
मिस्र	-	6 × पैदल सेना ब्रिगेड
		1 × घुड़सवार ब्रिगेड

भारत ने अंग्रेजों को न केवल सैनिक प्रदान किए अपितु धन व सामग्री से भी मदद की। प्रथम विश्व युद्ध में भारत ने 100 मिलियन पाउंड की धनराशि दी थी। 1917 में 100 मिलियन पाउण्ड देने का प्रस्ताव था। इस राशि का तीन चौथाई युद्ध ऋण अथवा बांड से जुटाया गया तथा शेष भारत सरकार द्वारा दिया गया था।

प्रत्यक्ष रूप से देखा जाए तो भारत ने 146.2 मिलियन पाउंड का ऋण ब्रिटिश को अपने राजस्व से दिया था। एक आंकड़े के अनुसार, भारत में लगभग 172,815 जानवर थे जिनमें 85,953 घोड़े, 65,398 टट्टू और खच्चर, 10781 ऊँट, 5061 बैल, 5692 डेयरी जानवर शामिल थे। 369.1 मिलियन टन सामग्री भारतीय बंदरगाहों से विभिन्न युद्ध स्थानों के लिए भेजी गयी।

युद्ध शुरू होने के प्रथम कुछ सप्ताह में ही भारत ने 70,000,000 राउंड के छोटे सेना कारतूस, 6,00,000 राइफल, मोटरी तथा मशीनगन की आपूर्ति की। गोली के खोलों का भी पर्याप्त निर्माण किया गया। आर्मी वस्त्र विभाग ने 1914 से 1918 के मध्य 41,920,223 वर्दियां बनाईं।

कच्ची सामग्री जैसे ऊन, मैग्नीज, नमक, टिम्बर, खाल, बंबू, सिल्क, चाय, रबड़, पेट्रोलियम, खाद्य तेल तथा खाद्य सामग्री, माइका (अभ्रक), भांग, नारियल जटा आदि भी भेजी गयी। मार्च 1919 तक कुल मिलाकर 2,737,862 टन खाद्य सामग्री भेजी गयी। इनमें मुख्य रूप से चावल, आटा, घी, चीनी, चाय, अनाज, मास, लकड़ी और जानवरों के लिए चारा, जैम, बिस्कुट तथा आग जलाने की लकड़ी शामिल थी।

आपने देखा कि सेना का रख-रखाव किस प्रकार किया जाता था। महत्वपूर्ण बात है कि भारत के पास उस समय भी यह सब कुछ था और उसने जरूरतमंद देशों की मदद की।

12.2 प्रथम विश्व युद्ध के प्रमुख युद्ध

आइए जानते हैं कि भारतीय सैनिकों को किन युद्धों में तैनात किया गया था। यह कालक्रमानुसार दिया गया है। मानचित्र 12.2 पर वे स्थान अंकित हैं जहां भारतीय सेना ने अपनी सेवाएं दी थी। सात प्रकार के बलों का गठन किया गया था जिन्हें यूरोप और अफ्रीका के विभिन्न भागों में भेजा गया। भारतीय सैनिक या तो युद्ध जीत गए या प्रभावी रूप से युद्ध मैदान में डटे रहे। इस युद्ध में नए हथियारों एवं नयी तकनीक का प्रयोग हुआ जिसे ट्रेंच युद्ध (Trench Warfare) कहा जाता है। कल्पना कीजिए कि शत्रु किसी गड्ढे में छुपकर बैठा है और आपको उस पर हमला करके पकड़ना है। हमला करने वाला खुले में होगा और रक्षा करने वाला ट्रेंच में सुरक्षित होगा। अत: युद्ध केवल बहादुरी से जीते जाते हैं परंतु इसमें जख्मी और मौतों के रूप में बहुत हानि हुई। विक्टोरिया क्रास से आप क्या समझते हैं? यह सबसे उच्च मेडल है जो युद्ध में शानदार प्रदर्शन पर ब्रिटिश सरकार द्वारा दिया जाता है। यह मेडल ब्रिटिश सरकार द्वारा 11 भारतीय सैनिकों को प्रथम विश्व युद्ध में दिया गया।

(i.) (यप्रस बेल्जियम) में भूमिका - भारतीय सैनिकों द्वारा लड़ा गया प्रथम युद्ध इप्रा में था। इप्रा फलैण्डर्स के निकट एक छोटा-सा शहर है जो बेल्जियम की सीमा पर लगता है। यह देश ब्रिटिश सेना के साथ जर्मनी के खिलाफ लड़ा था। यप्रस में पांच युद्ध हुए जो BEF - British Expeditionary Force (ब्रिटिश अभियान फौज) के नेतृत्व में लड़ा गया। भारतीय सेना पूरी तरह समर्पित थी और इस युद्ध में काफी क्षति हुई।

22 अप्रैल 1915 को इप्रा के द्वितीय युद्ध में इतिहास में पहली बार गैस से आक्रमण हुआ। दोबारा ब्रिटिश भारतीय सिपाहियों को कमी दूर करने के लिए बुलाया गया। ब्रिटिश भारतीय टुकड़ी में चेतावनी दे दी गई थी। उस समय इस प्रकार के गैस आक्रमण से बचने के लिए गैस मास्क का प्रयोग नहीं होता था। भारतीय सेना ने युद्ध कौशल का परिचय देते हुए ब्रिटिश सेना की जर्मनी पर जीत प्राप्त कर ली।

(ii.) फ्रांस में भूमिका - 4 अगस्त 1914 को ब्रिटेन युद्ध में शामिल हो गया। इसके साथ ही 6 सितम्बर 1914 को भारतीय सेना को फ्रांस तथा फ्लैण्डर्स में भेजा गया। यह भारतीय सैनिकों की यूरोप में पहली तैनाती थी। भारतीय सेना में लाहौर और मेरठ की टुकड़ी शामिल थी जिसने पेशेण्डेल, यप्रस, न्यूवे, चैपल आदि युद्ध में भाग लिया। जहां

लगभग आधी ब्रिटिश सेना भारतीयों की थी। फ्लैण्डर्स में भारतीय सिपाही खुदादाद खान को विक्टोरिया क्रास से नवाजा गया। यह मेडल इंग्लैंड की महारानी द्वारा दिया गया। वह पहला भारतीय था जिसे यह सम्मान प्राप्त हुआ।

(iii.) न्यूवे चैपल का युद्ध- यह युद्ध मार्च 1915 में फ्रांस के आर्टोइस क्षेत्र में हुआ। इस युद्ध की शुरूआत न्यूवे चैपल से हुई थी। 10 मार्च को ब्रिटिश सेना ने 35 मिनट तक गोला बारूद का प्रयोग किया। ये बमबारी भारतीय सैनिकों के 90×18 Pdr युद्ध बंदूक से हुई और जर्मनी की IV कोर दस मिनट में नष्ट हो गयी। बमबारी के पश्चात् पैदल सेना ने आक्रमण किया।

मेरठ डिवीजन की गढ़वाल ब्रिगेड ने 4 बटालियन के साथ 600 गज़ के फ्रंट पर पोर्ट अर्थर से पोंट लोजी तक हमला किया। भारतीय सेना ने अपने बल पर जर्मनी की सेना को 200 यार्ड पीछे धकेल दिया और उन्हें काफी नुकसान भी हुआ। मित्र सेना के 40,000 सैनिकों ने भाग लिया। 7,000 ब्रिटिश और 4200 भारतीय सैनिक हताहत हुए थे। 7वीं डिवीजन में 2791, 8वीं डिवीजन में 4,814, मेरठ डिवीजन में 2,353 और लाहौर डिवीजन में 1,694 हताहत हुए। 9-20 मार्च के मध्य जर्मनी के 10,000 सैनिक मारे गए। कई भारतीय सैनिकों ने विक्टोरिया क्रास जीते। उनमें से कुछ के नाम खुदादाद खान (129 ड्यूक ऑफ कनॉट'स ओन बलूचीस), गवर सिंह नेगी (सेकेण्ड बटालियन 39 गढ़वाल राइफल्स, सूबेदार मीर दस्त) 55 कोकस राइफल्स फ्रंटियर फोर्स) नायक डारविन सिंह नेगी (फर्स्ट बटालियन, 39 गढ़वाल राइफल्स, लांस दफादार गोबिन्द सिंह) (सेकेण्ड लान्सर्स) और राइफल मैन कुलबीर थापा (सेकेण्ड बटालियन थर्ड क्वीन एलेक्जेंडर ओन गुरखा राइफल्स) शामिल थे।

(iv.) गैलीपोली प्रायद्वीप में भूमिका- अप्रैल 1915 में गैलीपोली प्रायद्वीप में युद्ध के लिए गई पहली भारतीय टुकड़ी 21वीं कोहट माउंटेन बैटरी (Kohat Mountain Battery) और 26वीं जैकब माउंटेन बैटरी (Jacob's Mountain Battery) से थी। 14 जून, 1915 को 14वीं सिख सैनिक टुकड़ी, जिसमें 15 ब्रिटिश अफसर, 14 भारतीय अफसर और 514 पुरुष थे तुर्की खाई पर आक्रमण कर कब्जा कर लिए। 14वीं सिख टुकड़ी को इस युद्ध में कीर्ति प्राप्त हुई और अनेक सैनिकों ने सेवा मेडल प्राप्त किए। 14वीं सिख सेना का मुख्य कार्य कोजा चमन टेपे पर कब्जा करना था परंतु वह असफल रहो। यद्यपि इस युद्ध का कोई निष्कर्ष नहीं निकला, किन्तु मित्र देशों में भारतीय सैनिकों के शौर्य व गौरव का डंका बज गया। इसी कारण उन्हें अनेक मेडल भी प्राप्त हुए।

(v.) मेसोपोटामिया में भारतीय सेना- भारतीय सेना की सबसे बड़ी टुकड़ी भारतीय अभियान मेसोपोटामिया में ले. जनरल सर जॉन निक्सन के नेतृत्व में भेजी गयी। इसमें 16वीं पैदल सेना ब्रिगेड जो 6वीं पूना डिवीजन के अंतर्गत आती थी, को बांबे से मेसोपोटामिया भेजा गया। यह सेना जनरल सर अर्थर बेरेट के नेतृत्व में भेजी गयी। तुर्की में यह युद्ध नवम्बर 1914 में शुरू हुआ था। इस युद्ध में फाओ बंदरगाह तथा बसरा

पर कब्जा, साहिल में तुर्कों को हटाने आदि जैसी कुछ सफलताएं मिलीं। इस कारण ही वह रिफाइनरी व तेल क्षेत्रों को बचा पाए तथा साहिबा बर्जिसिया, खफाजीया, अमारा और नासरिया आदि ने भी समर्पण कर दिया। इस अभियान को सिटीस्फोन के युद्ध में धक्का लगा। यहाँ पर भारतीय सेना कूत-अल-अमरा लौट आई और जनरल टाउनशेंड (General Townshed) ने बसरा की तरफ बढ़ने की जगह अपनी स्थिति पर बने रहने की फैसला किया। उसने कूट को घेर लिया। घेराबन्दी हटाने के अनेक असफल प्रयासों के परिणामस्वरूप शेख साद की लड़ाई, वादी का युद्ध, हाना की लड़ाई तथा कूट का पहला युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध का नेतृत्व जनरल जॉर्ज गैरिज ने किया। मेसोपोटामिया अभियान में कुल हताहत सैनिकों की संख्या 92,501 थी। नायक समद खान (89 पंजाबी रेजीमेंट) लांस नायक लाला (41 डोगरा रेजीमेंट) और सिपाही छाता सिंह (9 भोपाल पैदल सेना) ने मेसोपोटामिया में गौरवशाली विक्टोरिया क्रास प्राप्त किए।

(vi.) मिस्र और फिलिस्तीन में भारतीय सेना- सरहिंद ब्रिगेड को स्वेज नहर की रक्षा हेतु भेजा गया। भारतीय शाही सेना में भारतीय राज्यों की सेना के सैनिक शामिल थे। ये 10वीं और 11वीं भारतीय डिवीजन के साथ मिस्र में भारतीय सेना के प्रयासों में सम्मिलित रहे। बीकानेर की ऊंट टुकड़ी और पहाड़ी सेना की तीन बैटरी भी शामिल थी। 1917 में भारतीय सैनिकों की मिस्र अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका थी। 23 सितम्बर 1918 को 15वीं शाही ब्रिगेड जिसमें मैसूर और जोधपुर लान्र्सस शामिल थे, ने उत्कृष्ट बहादुरी का परिचय देकर फिलिस्तिन में हाइफा पर कब्जा किया। इस युद्ध से पहले बीकानेर की ऊंट टुकड़ी का गठन किया गया जिसे कम ही लोग जानते हैं। बाद में इसके कुछ सिपाही शाही ऊंट टुकड़ी का हिस्सा बने।

(vii.) पूर्वी अफ्रीका में भारतीय सेना- पूर्वी अफ्रीका पर जर्मनी के प्रारंभिक हमलों को नाकाम कर दिया गया जब तक कि ब्रिटिश भारतीय अभियान सेना का 'ब' भाग जिसमें रावी (बैंगलोर) ब्रिगेड, 9वीं (सिकंदराबाद) डिवीजन और शाही सेना ब्रिगेड, एक बटालियन तथा एक पहाड़ी टुकड़ी के साथ इंजीनियरों का दल नहीं पहुंचा। इस दल को तंग्यानिका भेजा गया। मेजर जनरल आर्थर ऐटकेन के नेतृत्व में सेना 2-3 नवम्बर 1914 को तांगा पहुंची। तांगा के युद्ध में ऐटकेन के 8000 सैनिकों को जर्मन कमांडर पॉल वॉन लेटो- वोरबेक की 1000 सैनिकों की सेना ने नुकसान पहुंचाया। 5 नवम्बर 1914 को इस युद्ध में 817 सैनिक हताहत हुए। साथ ही अनेक राइफल, 16 मशीनगन तथा 600,000 गोलियों का भी नुकसान हुआ।

क्रियाकलाप 12.1

विश्व मानचित्र पर उन स्थानों को अंकित कीजिए जहां भारतीय सेना ने प्रथम विश्व युद्ध में हिस्सा लिया हो। उन देशों को भी चिन्हित कीजिए जहां युद्ध लड़े गए।

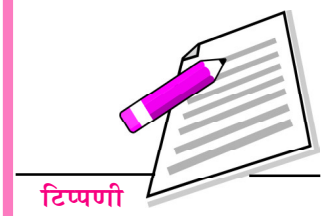

पाठगत प्रश्न 12.1

1. प्रथम विश्व युद्ध में कितने भारतीय सैनिकों को विक्टोरिया क्रास मिले?
2. प्रथम विश्व युद्ध के लिए कितनी अभियान सेनाओं का गठन किया गया था?
3. किन देशों में भारतीय सैनिकों ने युद्धों में भाग लिया?
4. प्रथम विश्व किस वर्ष से किस वर्ष तक चला था?

12.3 द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीय सेना की भूमिका

आपने यह जाना कि प्रथम विश्व युद्ध में राष्ट्र एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करते थे तथा एक-दूसरे पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहते थे। कुछ ऐसा ही द्वितीय विश्व युद्ध में हुआ। जर्मनी का एडोल्फ हिटलर यूरोप व रूस पर अपनी सत्ता जमाना चाहता था। इटली के मुसोलिनी ने हिटलर का साथ दिया। बाद में जापान ने मिलकर एशिया में धुरी शक्ति बनाने के विचार को स्वीकार किया। इसलिए यह युद्ध दो मोर्चों के मध्य लड़ा गया। एक यूरोप व रूस था तथा दूसरी दक्षिण-पूर्वी एशिया। यह युद्ध 1939 से 1945 के मध्य लड़ा गया। इसे विश्व युद्ध कहते हैं। इस युद्ध में अमेरिका ने हिरोशिमा व नागासाकी पर परमाणु बम गिराए थे। युद्ध के प्रारंभ में जापान ने चीन पर आक्रमण कर शंघाई, नानकिंग और वुहान पर कब्जा कर लिया था।

द्वितीय विश्व युद्ध (मानचित्र 12.2) जर्मनी द्वारा पोलैंड पर आक्रमण से शुरू हुआ था। यह आक्रमण 1 सितम्बर 1939 को हुआ। यह युद्ध मित्र देशों तथा धुरी राष्ट्रों के मध्य हुआ। मित्र राष्ट्र में ब्रिटेन, फ्रांस, सोवियत संघ अमेरिका तथा उसके मित्र देश शामिल थे तथा जर्मनी, जापान व इटली को धुरी के देश कहा जाता है। द्वितीय विश्व युद्ध प्रथम से भी अधिक व्यापक और तीव्र था। 30 से ज्यादा देश इसमें भागीदार थे। हताहतों की संख्या लाखों में थी। आइए इस युद्ध में शामिल महाद्वीप व देशों को देखें। यह युद्ध पूर्वी तथा पश्चिमी दो मोर्चों पर लड़ा गया था- पश्चिमी (यूरोप व अफ्रीका) तथा पूर्वी (दक्षिण पूर्वी एशिया) दोनों ओर के राष्ट्र आपस में युद्ध कर रहे थे।

चित्र 12.2 द्वितीय विश्व युद्ध का मानचित्र 1939-1945 विश्व एटलस।

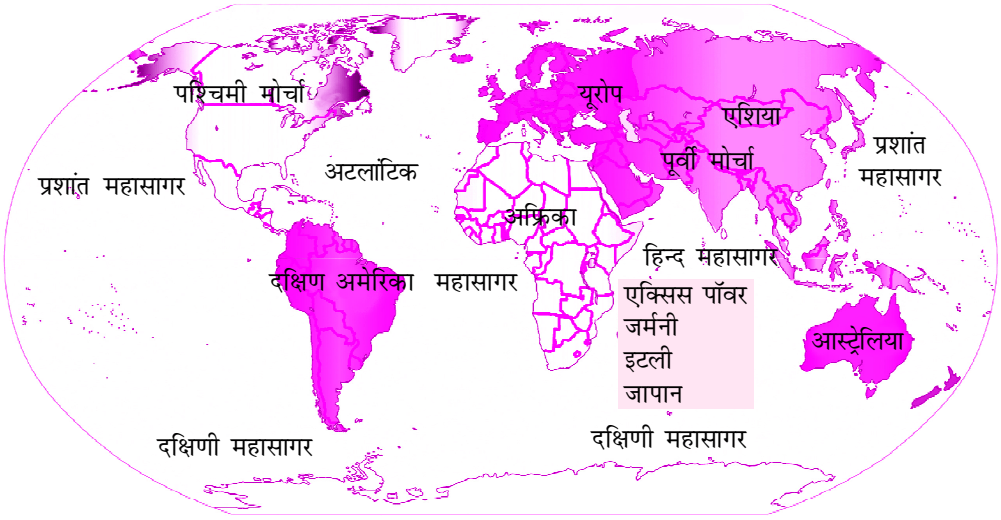

चित्र 12.2 विश्व मानचित्र

जैसा कि प्रथम विश्व युद्ध में हमने देखा कि ब्रिटिश स्वत: ही एक गुट में शामिल होकर युद्ध में शामिल हो गया, इसी कारण भारतीय सेना ने इस युद्ध में हिस्सा लिया क्योंकि पहले विश्व युद्ध में उसने अपार सफलता प्राप्त की थी। साथ ही शौर्य व अनुशासन के कारण भारतीय सेना विश्वसनीय थी। आइए देखते हैं इस बार भारतीय सेना किन स्थानों पर लड़ी। सर्वप्रथम हमें कुछ शब्दों का अर्थ ढूंढ़ना होगा जिन्हें युद्ध अथवा लड़ाई का वर्णन करते समय प्रात: प्रयोग किया जाता है। सर्वप्रथम हम जानेंगे कि Theatre of Operation अर्थात् युद्ध स्थान से क्या तात्पर्य है? इसका अर्थ है वह क्षेत्र जहां युद्ध हुआ हो। पुराने समय में युद्ध के मैदान निश्चित होते थे किन्तु वर्तमान समय में बड़ी सेना तथा विभिन्न देशों के कारण यह युद्ध योजना बनाकर होने लगे हैं। इस शब्द को केवल उन स्थानों को चिन्हित करने के लिए किया गया जिन पर कब्जा करना ही उद्देश्य था। भारतीय सेना को यूरोप, अफ्रीका, अरब/मध्य पूर्व तथा दक्षिण पूर्वी एशिया में तैनात किया गया। यह युद्ध तीन महाद्वीपों में लड़ा गया। दक्षिण पूर्वी एशिया में जापान से, इथोपिया में इटली से, ट्यूनीशिया, लीबीया तथा मिस्र में इटली व जर्मनी के विरुद्ध लड़ा गया।

12.3.1 पूर्वी क्षेत्र (Eastern Theatre)

जापान ने युद्ध की योजना बनाकर 8 सितम्बर 1941 को हांगकांग (चीन से) तथा मलाया प्रायद्वीप (थाइलैंड से) पर एक साथ हवाई हमला किया। मित्र देश युद्ध की दिशा देखकर हैरान थे। जापान ने शीघ्र ही इंडोनेशिया, थाईलैण्ड, मलेशिया, सिंगापुर और बर्मा पर कब्जा कर लिया। वे मणिपुर, मिजोरम तथा इम्फाल पहुंच गए थे। भारतीय सेना ने बहादुरी से उनका सामना किया और युद्ध का माहौल बदल दिया।

मलाया प्रायद्वीप में जापान ने नदी, सड़क, संचार, गांव तथा शहरों पर कब्जा कर मित्र देशों की सेना को आगे नहीं बढ़ने दिया। जापानी सेना ने घुसपैठ (दुश्मन के इलाके में छोटे समूहों में घुसना) तथा घेराबंदी (अनायास ही किसी भी दिशा से आक्रमण) का सहारा लिया। फील्ड

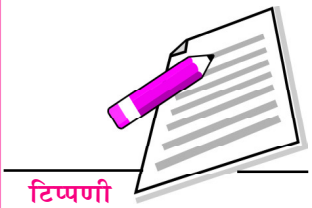

टिप्पणी

मार्शल स्लिम के तहत अंग्रेजों ने जापानियों के वापस खदेड़ने के लिए आक्रामक शुरूआत की। ये आक्रमण विभिन्न दिशा, जंगल, नदी आदि की ओर से होते थे। दोनों ओर से कड़ी लड़ाई होने के कारण अधिक लोग हताहत हुए थे। वर्मा में आरकान की लड़ाई में भारतीय सेना की पांच डिवीजन ने भाग लिया। अमरीका की वायु सेना ने आकाश में सहायता प्रदान की।

भारतीय जंगलों में लड़ने के लिए बहुत प्रशिक्षित थी और उसने घुसपैठ की और पीछे से शत्रु को मरने के लिए जापानियों की ही रणनीति अपनाई। अच्छी तरह नियोजित तथा साहसपूर्ण कार्रवाई के कारण जापान को समर्पण करना पड़ा तथा इस प्रकार दुनिया के इस हिस्से में युद्ध की समाप्ति हुई।

जापान के विरुद्ध हुए अन्य युद्ध हैं- कोहिमा का युद्ध (वर्तमान नागालैंड) तथा इम्फाल (मणिपुर) का युद्ध जिन्हें भीषण युद्ध माना जाता है। राबर्ट लिमन ने अपनी पुस्तक- "Japan's Last Bid for Victory:" The Invasion of India 1944" में इस युद्ध को भीषण युद्ध कहा है। अर्थात् इम्फाल युद्ध की हार जापानियों की सबसे कमजोर हार थी तथा इसने भारतीय सैनिकों को अपनी युद्ध कौशल बढ़ाने का मौका दिया।

फील्ड मार्शल क्लाड औचिनलेक, जो भारती सेना के मुख्य कमांडर थे ने कहा है कि भारतीय सेना के बिना ब्रिटिश दोनों विश्व युद्ध नहीं जीत सकते थे।

12.3.2 पश्चिमी क्षेत्र (Western Theatre)

आइए अफ्रीका में हुए युद्ध की विवेचना करें, जहां भारतीय सेना जर्मनी और इटली से लड़ रही थी। भारतीय सेना को एशिया से अफ्रीका लाया गया जहां कई युद्ध हुए।

(i.) अफ्रीका में इटली व जर्मनी ने पूर्वी अफ्रीका (Somalia, Eriteria और एबीसीनिया) तथा उत्तरी अफ्रीका (लीबिया व ट्युनीशिया) में अपना बस बना लिया था। इसके कारण जहाजों द्वारा होने वाले यूरोपीय देशों के व्यापार पर असर पड़ा। इसलिए मित्र राष्ट्रों को इन देशों को अपने शासन में मिलाना इनकी आवश्यकता बन गई। इसलिए पैदल सेना के तीन डिवीजन को जर्मनी व इटली के विरुद्ध लड़ने के लिए तैनात किया गया। ये युद्ध सहारा मरुस्थल, मिस्र, सूडान और सोमालिया में लड़े गए।

(ii.) ईराक और फारस में तेल के मैदान को जर्मनी से बचाने के लिए युद्ध हुए। जर्मनी उस समय रूस में आगे बढ़ रहा था। भारतीय सेना ने बसरा व अबादान में तेल मैदान पर कब्जा कर लिया। इराक व इरान के समर्पण के बाद भारतीय सेना को इराक में शांति स्थापित करने हेतु भेजा गया। मित्र राष्ट्र सीरिया व लेबेनान में जर्मनी का आधिपत्य नहीं चाहते थे। क्योंकि ये फिर (स्वेज नहर) पर कब्जा कर लेते। यह हमला बहुत सफल रहा और सीरिया व लेबनान पर कब्जा कर लिया गया।

(iii.) यूरोप में जर्मनी ने फ्रांस, पोलैंड, हंगरी पर कब्जा कर लिया तथा ग्रीस व साइप्रास पर कब्जे के लिए आगे बढ़ रहे थे। इस कार्रवाई से वह अफ्रीका-यूरोप व इराक के बीच एक लिंक बना सके। भारतीय सेना ने अक्टूबर 1943 में इटली तथा 1944 में ग्रीस पर कब्जा कर लिया था।

द्वितीय विश्व युद्ध में विक्टोरिया क्रास के विजेता भारतीय सैनिक

द्वितीय विश्व युद्ध - *पूर्वी अफ्रीका 1941*

रैंक	प्रथम नाम	उपनाम	रेजिमेंट
2nd लेफ्टिनेंट	परमिंदर सिंह	भगत	रायल बाम्बे सैपर्स एंड माइनर्स चौथी बटालियन
जमादार	रिछपाल	राम	छठी राजपूताना राइफल्स

विश्व युद्ध - II *उत्तर अफ्रीका 1943*

रैंक	प्रथम नाम	उपनाम	रेजिमेंट
कम्पनी हवलदार मेजर	छेलू	राम	चौथी बटालियन (आउट्राम) छठी राजपूताना राइफल प्रथम बटालियन,
सूबेदार	लाल बहादुर	थापा	द्वितीय किंग एडवर्ड VII ऑन गुरखा द सिमूर राइफल्स

द्वितीय विश्व युद्ध - बर्मा *1943-1945*

रैंक	प्रथम नाम	उपनाम	रेजिमेंट
सिपाही	फजल	दीन	7वीं बटालियन, 10वीं बलूची रेजिमेंट
हवलदार	गजे	घाले	राइफल्स (FF) तीसरी बटालियन, दूसरी किंग एडवर्ड VII ऑन गुरखा राइफल्स
राइफलमैन	भानभगता	गुरूंग	द सिमूर राइफल्स
राइफलमैन	लक्षीमण	गुरूंग	चौथी बटालियन, 8वीं गुरखा राइफल्स
जमादार	अब्दुल	हाफिज	तीसरी बटालियन, 9वीं जाट रेजिमेंट
लेफ्टिनेंट	करमजीत	जज	चौथी बटालियन, 15वीं पंजाब रेजिमेंट
राइफलमैन	गंजू	लामा	प्रथम बटालियन, 7वीं ड्यूक ऑफ एडिनबरा ऑन गुरखा राइफल्स
राइफलमैन	तुलबहादुर	पन	तीसरी बटालियन, छठी गुरखा राइफल्स
राइफलमैन	अगन सिंह	राय	दूसरी बटालियन, 5वीं रायल गुरखा राइफल्स
सिपाही	भंडारी	राम	16वीं बटालियन, 10वीं ब्लूची रेजिमेंट
लांस नायक	शेर	शाह	7वीं बटालियन, 16वीं पंजाब रेजिमेंट

नायक जार्ज	ज्ञान	सिंह	चौथी बटालियन, 15वीं पंजाब रेजिमेंट पहली बटालियन, (King Own) Ferozepore, Stokhs)
लांस नायक	नंद	सिंह	11वीं सिख रेजिमेंट
लांस हवलदार	प्रकाश	सिंह	5वीं बटालियन, 8वीं पंजाब रेजिमेंट
जमादार	प्रकाश	सिंह	14वीं बटालियन, 13वीं फ्रंटियर फोर्स राइफल्स
जमादार	रामस्वरूप	सिंह	दूसरी बटालियन, पहली पंजाब रेजिमेंट 33 बटालियन, 30 माउंटेन रेजिमेंट
हवलदार	उमराव	सिंह	भारतीय पैदल सेना
जमादार	नेत्र बहादुर	थापा	दूसरी बटालियन, 5वीं गुरखा राइफल्स

द्वितीय विश्व युद्ध–*इटली 1944–1945*

रैंक	**प्रथम नाम**	**उपनाम**	**रेजिमेंट**
नायक	यशवंत	घाडगे	तीसरी बटालियन, 5वीं मराठा हल्की पैदल सेना
राइफलमैन	थामन	गुरूंग	पहली बटालियन, 5वीं रायल गुरखा राइफल्स छठी रॉयल बटालियन (सिधी) 13वीं
सिपाही	अल	हैदर	फ्रंटियर फोर्स राइफल्स
सिपाही	नामदेव	जाघव	पहली बटालियन, 5वीं मराठा हल्की पैदल सेना
सिपाही	कमल	राम	तीसरी बटालियन, 8वीं पंजाब रेजिमेंट
राइफलमैन	शेर बहादुर	थापा	पहली बटालियन, 9वीं गुरखा राइफल्स

पाठगत प्रश्न 12.2

1. द्वितीय विश्व युद्ध.....से..... तक लड़ा गया।
2. युद्ध के दो क्षेत्र..... तथा..... थे।
3. भारतीयों ..... कितने को द्वितीय विश्व युद्ध में विक्टोरिया क्रास दिया गया?

आपने क्या सीखा

- दोनों विश्व युद्ध में भारत के सब भागों से सैनिक शामिल थे और उन्हें बड़े युद्ध लड़ने

का प्रशिक्षण तथा अभ्यास दिया गया था। काफी सेनाओं को प्रशिक्षण दिया गया तथा उन्होंने इस बड़े युद्ध में लड़ाई के हुनर का प्रयोग किया।

- भारतीय सेना पूर्वी तथा पश्चिमी, दोनों क्षेत्रों में मित्र देशों के साथ बहादुरी से लड़ी।
- ब्रिटिश ने भारतीय सैनिकों को उनकी बहादुरी के लिए मेडल दिए और भारतीय सिपाहियों की बहादुरी को मान्यता देने के लिए उनकी सेवाओं को सम्मान दिया।
- विश्व युद्ध में सम्मिलित होने से भारतीय सेना ने युद्ध की आधुनिक युद्ध तकनीक का अनुभव लिया।
- भारत ने न केवल सैनिक देकर अपितु धन व सामग्री देकर भी ब्रिटेन को योगदान दिया।
- द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीय सेना ब्रिटेन की ओर से शामिल हुई थी।
- यह युद्ध मित्र देशों (ब्रिटेन, फ्रांस, सोवियत संघ) की सेना व धुरी राष्ट्र (जर्मनी, इटली व जापान) की सेना के मध्य हुआ था।
- भारतीय सेना ने द्वितीय विश्व युद्ध के अनेक क्षेत्रों में हिस्सा लिया।

पाठांत प्रश्न

1. प्रथम विश्व युद्ध के कारण लिखिए।
2. द्वितीय विश्व युद्ध के दो कारण लिखिए।
3. टिप्पणी कीजिए-

   (क) यप्रेस युद्ध (ख) न्यूवे चैपल युद्ध
4. द्वितीय विश्व युद्ध में पूर्वी व पश्चिमी क्षेत्र (Eastern and Western Theatre) को संक्षेप में समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1

1. 11 (ग्यारह) विक्टोरिया क्रास
2. 7 (सात)
3. फ्रांस, फारस की खाड़ी और मिस्र
4. 1914 से 1918

12.2

1. 1939 से 1945 तक
2. पश्चिमी तथा पूर्वी क्षेत्र
3. 28 (अठाइस)